

116

राजस्व अड्डना प्रकालिप (धूप), लख-कुप
नवागालय श्रीमान देवदत्त नहोदय, सागर जमाग रायग मंग्रेज
कालीन देवदत्त नहोदय के द्वारा कालीन देवदत्त नहोदय के द्वारा

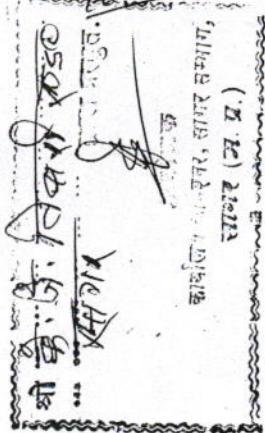
प्रहार पिता गनेश प्रवाद दुमो
पिता गनेश प्रवाद दुमो
तहसील वा ज़िला रायग (मंग्रेज)

R. 3446-II/15

B.O.R.

1 SEP 2015

246
16-09-15



II विश्व II

- (१) राजाराम पिता दौलत दुमो
 - (२) गनेश पिता दौलत दुमो
 - (३) परेशदो पिता दौलत दुमो
 - (४) इरविशन पिता दौलत दुमो
 - (५) देवदत्त पिता दौलत दुमो
 - (६) रामशंकर पिता दौलत दुमो
 - (७) यनोदेवदो पिता दौलत दुमो
 - (८) सुरज तिंह नाथबाई बहद वा बली पराहां
 - (९) हाँराम पिता पराह दुमो पराहां
 - १० श्रीमति गिरिजा रामी डिवारा परिन हरिराम दुमो
 - ११ रामरेवक बहद स्वरू हरिराम दुमो
 - १२ नन्हेमाई पिता स्वरू हरिराम दुमो
 - १३ श्रीराम पिता स्वरू हरिराम दुमो - सा० प्रारोनिया
 - १४ बाला प्रसाद पिता स्वरू हरिराम दुमो
 - १५ श्रीमति मागबाई पुढो स्वरू हरिराम दुमो
- साक्षि- गिरवर तहसील वा ज़िला
रायग (मंग्रेज)

-- प्रति उपीला-धीरेण्ठ

पुक्काट्टेंग

रामकृष्ण

प्रस्तुत दिनांक 16/15

पुनरीकाण अंगत धारा ५० मंग्रेज मूरठ १८५६

पुनरीकाण का विवरण

न्यायालय राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेश—ग्वालियर

अनुवृत्ति आदेश पृष्ठ

प्रकरण क्रमांक R 3446-II/15

जिला सागर

रथान तथा दिनांक	कार्यवाही तथा आदेश	पक्षकारी एवं अभिभाषकों आदि के हस्ताक्षर
9-3-2016	<p>मैंने आवेदक अधिवक्ता के तर्क सुने और नस्ती का परिशीलन किया।</p> <p>यह निगरानी अनु अधि, सागर के अपीलीय प्र क्र १७०/अ६/११-१२ में पारित आदेश दि १५-६-१५ के विरुद्ध प्रस्तुत है। अनु अधि ने इस आदेश से इस न्यायालय के आवेदक द्वारा उनके समक्ष उनके अधीनस्थ न्यायालय के आदेश दि २३-७-११ के विरुद्ध प्रस्तुत अपील को विलम्ब के आधार पर, विलम्ब हेतु बीमारी का कारण बताने किन्तु बीमारी के सम्बन्ध में कोई दस्तावेज़ नहीं प्रस्तुत किये जाने के कारण, निरस्त किया है। अनु अधि के इसी आदेश के विरुद्ध राम में यह निगरानी आवेदन प्रस्तुत हुआ है।</p> <p>आवेदक अधिवक्ता ने तर्क में बताया कि विचारण न्यायालय तहसीलदार, सागर द्वारा मृतक ठाकुरदास की फौती का प्रमाणीकरण दि २३-७-११ पारित करने के पूर्व उसे व्यक्तिशः नोटिस और सुनवाई का अवसर नहीं दिया। आदेश दि २३-७-११ की जानकारी मिलने पर आवेदक ने दि ८-६-१२ को उसकी प्रतिलिपि हेतु आवेदन लगाया और दि १३-६-१२ को प्रतिलिपि मिलने पर उसने अनु अधि के समक्ष अपील प्रस्तुत की। उसका कहना है कि मृतक ठाकुरदास की वसीयत दि २५-५-०५ के अनुसार उसे उसकी सम्पत्ती पर भूमिस्वामी दर्ज किया जाना चाहिए था, किन्तु अनु अधि द्वारा विलम्ब माफ नहीं किया जाने से न्याय का व्यापक उद्देश्य विफल हुआ है।</p> <p>प्रकरण में परीक्षण एवं विचार उपरांत में प्रकरण में निम्न महतवपूर्ण बिंदु पाता हूँ:</p> <ul style="list-style-type: none"> • आवेदक प्रहलाद द्वारा उपलब्ध कराए गए संशोधन पंजी आदेश दि २३-७-११ की प्रति के अवलोकन से स्पष्ट है कि उसे उस संशोधन पंजी प्रकरण में पक्षकार नहीं बनाए जाने के कारण उसे उस आदेश की जानकारी समय पर नहीं मिल पाई। इसके अतिरिक्त आवेदक अधिवक्ता ने प्रहलाद के पक्ष में निष्पादित विषयांकित कथित वसीयतनामे दि २५-५-०५ 	

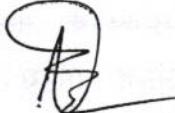
की प्रति इस न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत की है. इनके परिशीलन से प्रकरण के गुणदोष न्यायहित में विचार किये जाने योग्य प्रथमवृष्टया प्रतीत होते हैं.

- उनके द्वारा चिकित्सा से सम्बंधित दस्तावेजों की प्रतियाँ, अनु अधि के समक्ष प्रस्तुत धारा ५ के आवेदन की प्रति, तथा न्यायवृष्टान्त १९९० रा नि ९२ जीवनलाल वि कालिंदी बाई, १९९० रा नि २३७ केशरी वि झब्बू और १९८९ रा नि १९२ शीला तथा अन्य वि ललजा काछी भी इस न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किये हैं, जिनके प्रकाश में मुझे अनु अधि के समक्ष अपील के प्रस्तुतीकरण में हुआ विलम्ब माफी योग्य प्रतीत होता है.

अतः, उपरोक्त के प्रकाश में मैं अनु अधि के समक्ष अपील के प्रस्तुतीकरण में हुआ विलम्ब माफ करता हूँ. साथ ही अनु अधि को उनके न्यायालय का अपीली प्र क्र १७०/अ६/११-१२ पुनः खोलकर उसमें उभयपक्ष को पक्ष समर्थन आदि का समुचित अवसर देते हुए, गुणदोष पर विचार कर आदेश पारित करने के निर्देश देता हूँ.
इन्ही निर्देशों के साथ यह प्रकरण रा मं से समाप्त किया जाता है.
आदेश पारित.

पक्षकार एवं अनु अधि, सागर सूचित हों.
प्रकरण समाप्त.

दा द हो.



(आशीष श्रीवास्तव)

सदस्य

